Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 04, October, 2018, pp. 318-324

jktiwrkuk ds ykd xhrks esa fczfV'k tu vkØks'k&1857 bZ-

कृष्ण गोपाल माली*

'kks/k lkj

राजपूताना के लोकगीत, राष्ट्रीय चेतना की जागृति तथा जनता की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम रहे। लोक काव्यों की जन आक्रोश को उत्तेजित व उत्प्रेरित करने में महत्ती भूमिका रही। इनमें ब्रिटिश विरोधी जनभावनाओं को अपनी–अपनी रचनाओं के द्वारा उजागार किया है। राजपूताना में ब्रिटिश निरंकुशता के विरूद्ध जन आक्रोश, 1857 ई. को क्रांति के विशेष सन्दर्भ में शासकों को राजनीतिक चिन्तन की प्रेरणा देकर संदेश दिया कि अभी भी आप नौकरशाही का समर्थन करोगे तो भावी स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु संगठित जन आन्दोलन राजपूताना से शासक शक्ति को ही समाप्त कर देगा। प्रतीत होता है कि 1857 ई. के जन आंदोलन में लोकगीतों ने पृष्ठभूमि तैयार की जो स्वतन्त्र भारत की इमारत के रूप में प्रजातंत्रीय व्यवस्था के साथ आज भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में बडे लोकतन्त्र के रूप में प्रतिष्ठित हो सकी। लोक गीत अंग्रेजी विरोधी नीतियों को दर्शाने के लिये पर्याप्त रहे, जो क्रान्ति के बाद भी कई वर्षो तक जन मानस को कंठस्थ रहे। ये लोकगीत जो होली के अवसर पर 'चंग' (ड्रम) पर जोर–जोर से प्रस्तुत किए जाने लगे जो आज भी उस समय की परिस्थितियों एवं घटनाओं को ताजा कर देते है।

'kCnkoyh% राजपूताना, लोकगीत, राष्ट्रीय चेतना, जन आक्रोश, 1857 ई.।

---

izLrkouk

राजस्थान में ब्रिटिश नौकरशाही के विरुद्ध जन आन्दोलन को संगठित व प्रेरित करने में समकालीन सृजित लोक साहित्य में लोक गीतों ने उत्प्रेरक का कार्य किया। जनमानस की आत्मा की भावना का अंकन और अभिव्यक्ति का मुखर स्वरूप लोकगीतों में हुआ।

1818 ई. में राजस्थान के राजपूत शासकों से अंग्रेजों ने इन्हें बाह्य आक्रमणों एवम् आन्तरिक सामन्तीय उपद्रवों से सुरक्षा प्रदान करने की शर्त पर संधियाँ की। परन्तु, शनैः–शनैः अंग्रेजों के राजनीतिक हस्तक्षेप से शासकों की सार्वभौमिक शक्ति का अपहरण होने लगा। आर्थिक विपन्नता तथा सामाजिक अव्यवस्था ने जन मानस को उद्वेलित किया। जन मानस की भावना लोकगीतों, कविताओं पर दोहे के रूप में मुखरित होने लगी। समाज की धरोहर लोकगीतों ने लोक जीवन में ब्रिटिश नौकरशाही के विरुद्ध असंतोष व आक्रोश को उत्तेजित किया। ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में लोकगीतों में मुखरित 1857 ई. के विद्रोह का स्वरूप मौलिक एवं व्यापक हो सका जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित कर उसे जन आन्दोलन के रूप में संगठित होने के लिए प्रशस्त किया। इन लोक गीतों के द्वारा शासक वर्ग में त्याग, बलिदान, शौर्यता, साहस तथा मातृभूमि की रक्षार्थ आदि इतिहास को पुनः स्मरण कराकर उनमें ब्रिटिश विरोधी कम्पनी शासन से उत्पन्न आर्थिक विपन्नता तथा उसके कारण उत्पन्न असंतोष की भावना को उत्तेजित किया। जोधपुर, बीकानेर, मेवाड़, कोटा– बूंदी (हाडौती), अलवर, भरतपुर रियासतों में लोक गीत काव्य ने जन आन्दोलन को विस्तार दिया।

---

* शोधार्थी, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

1824 ई. में बीकानेर राज्य के दड़ेवा गाँव के ठाकुर लक्ष्मण राजसिंह ने कुछ राजपूतों के साथ (अंग्रेजी इलाके के भाग) हरियाणे को लूटा। चुरू, रतनगढ़ व सुजानगढ़ के सरदार माधोसिंह, रूपसिंह, धन्नाराज, शिवराज ठाकुर आदि ने 1835–1847 ई. में उत्साहित होकर अंग्रेजों को तंग करना शुरू कर दिया।[1] शेखावटी प्रदेश गाँव बठोठ पाटोदा (सीकर) निवासी डूँगरसिंह तथा भतीजे जवाहर सिंह, शेखावत राजपूत भी अंग्रेजों की खिलाफत करने लगे। उन्हें ज्ञात था कि आमने–सामने की लड़ाई में वे अंग्रेजी शक्ति और साधन के आगे ठहर नहीं सकेंगे, अतः छापामार पद्धति द्वारा लूट मचाने तथा उन्हें नुकसान पहुँचाने की ठानी। बठोठ गाँव छोड़कर अंग्रेज विरोध के लिए निकल पड़े। डूँगजी–जवाहरजी, लोटिया जाट, करणा मीणा तथा अन्य साथियों ने राजगढ़ के सेठों के माल से लदे ऊँटों की कतारों को जो अजमेर जा रही थी, अंडावला की घाटी में लूट लिया। बहुत सा धन उन्होंने गरीबों के मध्य भी बाँट दिया।[2] इस सम्बन्ध में प्रचलित लोकगीतों में कहा गया है–

''सात सवारां नीसरया, वै हुआ कतारां लार
चलती बोरी काट दी, वां मूंग्या दिया खिंडाय
चुग–चुग हास्या बालदी, चुग–चुग छक्या ग्वाल,
चुग–चुग दुनियां धापगी वा जै बालंती जाय।''

अर्थात् सात सवारों को लेकर निकले और कतारों के पीछे हो गये। उन्होंने चलती हुई बोरियों को काट डाला, मूंगों को बिखरा दिया, जिनको चुन–चुन बैलों वाले व ग्वाले थक गये। उस धन को उन्होंने गरीबों, के मध्य बांट दिया। लोकगीत में उनके लूट के कृत्य को भी न्यायपूर्ण बताया गया है क्योंकि लूट का उद्देश्य मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रयुक्त धन और गरीबों से मध्य दान से सम्बन्धित है।[3] तब अंग्रेजों ने अपने ही स्तर पर डूँगरसिंह का पता लगाने की बहुत कोशिश की, पर असफल रहे। अंत में अंग्रेजों ने डूँगजी के साले भैरोसिंह गौड़ को बहकाकर तथा लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। डूँगजी को उनके ससुराल झड़वासा (रामगढ़) में शराब पिलाकर भैरोसिंह ने उन्हें सोते हुए गिरफ्तार करवा दिया।[4] उसके इस कृत्य को लोकगीतों में भी बहुत धिक्कारा गया है।

''भैरूसिंध ने भली विचारी, भलो निभायो मेल
आछी करी जुंवारी मेरी, भलो दियो नारेल
दुनियां मैं तैं नांव कढ़ायो, मूंढो हुयग्यो कालो
भाण–भनेई कै लागे तुं दगाबाज कौ सालो।''

दूसरी ओर डूँगजी–जवाहरजी की प्रशंसा में इन लोकगीतों[5] में कहा गया है कि ऐसा वीर (डूँगसिंह) एक ही है यदि दो चार होते तो फिरंगियों को मार–मार कर कलकत्ते से बाहर निकाल देते–

''इसड़ो रांघड़ एक है रे, जै होवै दो च्यार,
मार–मार फिरंगियों ने कर दे कलकत्ता के पार।''

गीत की भावना स्पष्ट करती है कि लोकमानस में अंग्रेजों के प्रति उपेक्षा तथा क्रोध की भावना थी, और जनता उन्हें देश से बाहर निकालना चाहती थी। जनता अंग्रेजों का प्रतिकार या विरोध करने वाले लोगों को अपना नेता मानकर उसी के अनुरूप आन्दोलन में सम्मिलित होती थी।

लोटिया जाट व करणा मीणा तथा जवाहरजी आदि सरदारों ने साधु का वेश धारण कर पता लगाया है कि डूँगजी आगरे के किले में कैदियों के बीच कैद है। 1846 ई. में इन्हें पांच माह की कैद की सजा मिली क्योंकि इन्होंने फतेहपुर के व्यापारी सेठ निर्मलचन्द सेठी के तीन लाख रु. लूट लिये थे। अंग्रेजों ने इन्हें धोखे से पकड़ आगरा की जेल में रखा।[6] लोकगीत में मुखरित स्वरः

मोरझड़ी की दारू कढावै आंगण भट्टी तुड़ावे
दारू पायर करया बावला मेड़ी माय चढ़ावे
चार फिरंगी ओटे बैठया चार चढ़ गया मेड़ी
डूंगर सिंध ने सूतो पकडयो पगां ठोक दी बेड़ी।

डूँगजी को जब होश आया तब उन्होनें क्रोधित होकर कहा–

''बढ़ बढ़ चाबै आंगली, बो कढ़–गढ़ चाबै जाड़।
नैण जगै ज्यूं दीवला जारी, सवा हाथ री नाड़।।''

अर्थात् वह बड़–बड़ करता हुआ अंगुलियां चबाने लगा, कढ़–कढ़ दाढ़ों को कटकटाने लगा। उसके नेत्र दीपक की तरह जलने लगे। उसकी गर्दन सवा हाथ लम्बी थी। डूँगजी क्रोध दीप्त वाणी में गरज उठे–

''फिट–फिट थारी जामण जाई, फिट–फिट थारो बाप।
आठ गादड़ा मिल थे, कर्यो सिंध सूंघात।।''

अर्थात् धिक्कार है, तुम्हारी माँ को। धिक्कार है, तुम्हारे बाप को। मुझ जैसे अकेले सिंह को तुम आठ गीदड़ों ने घेरकर घात किया है। अंत में डूँगजी अपने साले को ताना मारते हुए व्यंग्यपूर्वक कहते हैं–

''आछी करी जुवारी म्हारी, भलो दियो नारेल।''[7]

इसके पश्चात् डूँगजी आगरे के किले में कैद कर दिये गये। एक दिन कम्पनी का अंग्रेज अधिकारी मि. कैप्टन पैली एडेन जब डूँगजी को देखने आता है और उन्हें देखकर डूंगजी कहते हैं–[8]

''भल–भल तो माथौ करे, नैणा जले मसाल।
इसको राँघड़ एक है रे, जे होवै दो च्यार।।''

उन्होंने डूंगजी को आगरे की जेल से मुक्त कराने के लिए बाठोठ से बारात के छद्मवेश में 31 दिसम्बर 1846 को रामसिंह शेखावत, शिवराज बीदावत, श्योराम नरूका, मेडतियां परिवार, राजूराम तंवर आदि[9] को साथ जब ताजियों की सवारी निकल रही थी तब लोटिया और करणिया ने आगरे के किले में प्रवेश कर डूँगजी से कहा कि सरदार! मैं आपकी बेडियाँ काटने आया हूँ, तब डूँगजी शेर के समान गर्जना करते हुए कहते हैं–

''म्हारी बेड़ी काट्या, लोटिया ना निसरैगो नांव।
म्हारी बंध में सित्तर बंधवा, बांको पैली काट।
कैकी रोवै बैन भाणजी, कैकी रोवै माय।।''

अर्थात् हमारी कैद में सत्तर कैदी बंदी बनाये हुए हैं, तुम पहले उनको स्वतन्त्र करवाओ, फिर मुझे। किन्तु लोटिया कहता है कि– डूँगजी अब इतना समय नहीं है, शीघ्र ही फिरंगी आने वाले हैं, मैं तुम्हें तत्काल ही स्वतन्त्र करवा देता हूँ। तब डूँगजी कहते हैं– यदि तुम्हें फिरंगियों से इतना डर है तो तुम पुनः वापस लौट जाओ। ऐसे नामर्द से छुटकारा पाने की अपेक्षा जेल में सड़कर मरना मुझे अधिक पसंद है। डूंगजी कहते हैं कि पहले मेरे साथ के सत्तर कैदियों की बेड़ी काटना फिर मेरी, नहीं तो दुनिया क्या कहेगी कि डूंगजी तो चोर की तरह निकल भागा–

''पैला तो बंधवां की काटे, पाछै म्हारी काट
कै जाणेगा सितर बंधवा, कै जाणेगा लोग
बुरज तोड़कर बायर काढो बंधवाओ को साथ
दो दिन में मर ज्यावा, लोटिया! दूनी करेगी बात।''

लोटिया ने जब यह सुना तो उसने सभी कैदियों की बेडियां काट कर उन्हें स्वतंत्र कर दिया।[10] डूँगजी जेल से स्वतन्त्र होकर इस प्रकार बाहर निकले मानों पींजरे से कोई बब्बर शेर निकला हो। इसके पश्चात् डूँगजी, जवाहरजी, लोटिया सरदार, करणियां एवं इनकी छोटी सी सेना ने तलवारों से तीव्र प्रहार करते हुए फिरंगी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिये।[11] असंख्य अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया गया।

कवि शंकरदान सामोर भी इस घटना पर प्रकाश डालते हैं–

लंगरी खगाटां पांण डूंग ने छुड़ाय लायो
सोभा तिहुँ थाना सोख पायो सूर चन्द
पायो फतै ज्वार नाम रहायो छवंतो प्रभा
बाप आसमान लागो आयो नेत बंद।[12]

इसके पश्चात् डूँगजी–जवाहरजी ने अपने दल को संगठित कर 18 जून, 1847 की रात्रि में नसीराबाद की छावनी पर साहसपूर्ण आक्रमण किया एवं छावनी का खजाना खजाने में से 52 हजार रुपये, 22 घोड़े लूटकर मारवाड़ में प्रवेश किया।

आगरा से मुक्त होने के बाद डूंगजी के दल ने 18 जून, 1847 को नसीराबाद छावनी पर हमला कर 52 हजार रुपये, 27 घोड़े लूट लिये। डूंगजी व जवाहरजी के आतंक से भयभीत व आतंकित अंग्रेज अधिकारी कैप्टिन मेसन, कैप्टिन हाईलाक्स, मेजर फोरेस्टर और कैप्टिन शॉक ने इनको पकडने में जोधपुर तथा बीकानेर फौज की सहायता ली। डूंगजी मारवाड़ की तरफ चले गये लेकिन जवाहर जी बीकानेर में लेफ्टिनेंट शॉवर्स और राज्य की सेना द्वारा पकड़ लिये गये लेकिन डूंगजी को नहीं पकड़ा जा सका।

अंगरेजा ने खबर पड़ी, जद चढगी फौजा च्यार
रात रात की करी मजल, वै पूंची सीकर माय
सीकर रा प्रतापसिंध! म्हाने डूंग न्हार पकडाय
म्हारो लो भाई–भतीजो, पकडायो न जाय।

जोधपुर के किलेदार अनाडसिंह ने लेफ्टिनेन्ट कमाण्डर मॉन्कमेसन को सूचना दी कि डूंगजी डीडवाना के आसपास घूम रहा है। उसे शक था कि कुचामन के ठाकुर ने डूंगजी को संरक्षण दिया है। अन्त में ए.जी.जी. सदरलैंड द्वारा 28 दिसम्बर, 1847 को जयपुर के गाँव पाटोदा में डूंगजी को घेर लिया गया।[13] एजीजी द्वारा वचन दिये जाने पर कि उसे जोधपुर ले जाया गया जहाँ डूंगजी ने 15 जनवरी, 1848 ई. को आत्मसमर्पण कर दिया।[14] जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह, बीकानेर के महाराजा रतनसिंह अलवर के महाराजा भीमसिंह तथा एजीजी कर्नल जॉन सदरलैंड के अनुरोध करने पर गवर्नर जनरल ने हार्डकेसल द्वारा डूंगजी को दिये वचन के काण उनकी फाँसी की सजा को आजीवन कारावास में बदलकर, उन्हें 8 अगस्त, 1848 को जोधपुर को सौंप दिया गया तथा डूंगजी जोधपुर से भागने न पाये इसकी जिम्मेदारी जोधपुर के महाराज को दी गई।[15]

इस प्रकार सन् 1857 से पूर्व स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार करने वाले शूरवीरों में शेखवाटी के बठोठ ठिकाने के डूंगजी जवाहर जी (चाचा भतीजा) का जागीर के आन्तरिक मामले को लेकर अंग्रेजों से युद्ध छिड़ गया। सिगरावट में एक महीने अंग्रेजी फौज से घिरे रहे फिर अचानक वहाँ से निकल गये। बाठोठ किले पर मेजर फोरेस्टर का अधिकार हो गया। इन्होंने अपने छापामार सैनिकों सैनिकों का संगठन किया। जागीरदारों, व्यापारी वर्ग व जन सामान्य में इनके लिये सम्मान था। अंग्रेजों ने गलत प्रचार करके इन्हें डाकू मशहूर कर दिया।[16] वे ब्रिटिश छावनी और सरकारी खजाना लूटते थे और गरीबों की सहायता करते थे। गीत की पंक्तियों से स्पष्ट है कि–

सात उंट दरबा का भरिया पोकर जी के जाय
पोकर जी के घाट पर बां जाजम दिवी बिछाय
गरीब–गुरबां वामणा–नै हैलो दियो मराय
रूपियो–रूपियो दियो वामणां मोरा चारण भाट
असी मोर दी नानगसाही, सांखो दियो जुड़ाव।

1844 से 1846 ई. के लगातार भयंकर अकाल के कारण त्रस्त किसान व प्रजा की आर्थिक दुर्दशा के कारण डूंगजी व जवाहरजी धनवानों से धन लूटकर भूखे, नंगे, शोषित पीड़ित लोगों को वितरित कर अंग्रेजी सत्ता को चुनौती प्रदान करते थे। अकाल के कारण जनता त्रस्त हो चुकी थी यथा–

''मिनखां निठगी मोठ बाजरी, घोड़ा निठगी घास।''

डूँगजी–जवाहरजी इतने वीर पुरुष थे कि फतेहपुर (शेखावाटी) में आज भी लोग इन्हें लोक–देवता के रूप में श्रद्धापूर्वक पूजते हैं। शेखावाटी में भोपे भी इनकी विरूदावली गाते हैं, जो फतेहपुर के प्रसिद्ध ख्यालकार श्री प्रेमजी भोजक द्वारा उद्धृत हैं–

''आद नाम देवी ने सँवरूँ, लागूँ गजानंद पाँव।
सीकर राजा बैठना बठोठरा सरदार।।''
फिरंग प्रलै जन फैलियो, तज दूहूँ राहा टेक
पांन अखै–वड, पदम रो उचौ रहियो ऐक।[17]

बाकीदास (1781 से 19 जुलाई, 1833 ई.)

मारवाड़ रियासत में राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक बांकीदास जोधपुर राज्य के पचभदरा परगने के निवासी तथा आसिया शाखा के चारण थे। रामपुर के ठाकुर अर्जुनसिंह ने इनकी विद्वता के कारण स्वयं के खर्चे पर जोधपुर में अध्ययन के लिए दरबार पाठशाला, जोधपुर में शिक्षक के रूप में भेजा जहाँ वे महाराजा मानसिंह के गुरू देवनाथ के सम्पर्क में आये, जिन्होंने बांकीदास का परिचय मानसिंह से करवाया। मानसिंह ने बांकीदास का डिंगल, पिंगल, संस्कृत, फारसी बोली से प्रभावित होकर दस हजार का पसाव देकर शाही दरबार में मंत्री के पद पर बने रहने का आदेश दिया।

कवि बांकीदास जोधपुर महाराजा मानसिंह के कृपापात्र बन गये। संस्कृत, डिंगल, फारसी व ब्रजभाषा के प्रकांड पंडित थे। आपके कुल 27 ग्रन्थ एवं फुटकर गीत हैं। बांकीदास ने अपने गीतों के माध्यम से सभी राजाओं एवं सामन्तों से हिन्दुओं व मुसलामानों का भेदभाव भुलाकर अंग्रेजों से लोहा लेने को ललकारा था।[18] उन्होंने अपने गीतों में भरतपुर के जाट राजा रणजीत सिंह के ब्रिटिश संघर्ष को आदर्श माना। जिसने ब्रिटिश नौकरशाही के विरुद्ध संघर्षरत मराठा सरदार जसवंतराव होल्कर को शरण दी। इस कारण अंग्रेज उनसे नाराज हो गये। रणजीत सिंह ने 7 जनवरी 1805 को अंग्रेजों से युद्ध लड़ा लेकिन अपने शरणागत होल्कर को पंजाब में शरण देकर उसकी रक्षा की। बांकीदास ने जयपुर, उदयपुर और जोधपुर के राजाओं को ब्रिटिश नौकरशाही के बढ़ते प्रभाव का समर्थन करने तथा अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार करने का विरोध किया। वह लिखते हैं–

कीजियो भलो भरतपुर वालो, गाजे गजा घजर नभ गोम
पहिला सिर साहब रो पडियो, मड उभा नह दीधी भौम।

अपने अन्य गीत 'भरतपुर री राड़ रौ' में उन्होंने भरतपुर के राजा को शरणागत की रक्षा करने वाला तथा उनका स्वाधीनता प्रेम दर्शाया है।

अलीमन सूर रो वंस कीधै असत रेस टीपू बिलै त्रंबट रूड़िया
लाट जनरल जरनैल करनैल लख जाट रे किले जमजाल जुड़िया।
मेर मरजाद रणजीत आखा डमल खेर दीधा उसण जबर खैटै।।
पुखत गुरगम मिली सेन पण पांकियो भरतपुर फेर नह उसर भैंटै।।[19]

इसी प्रकार मरूधर नरेश को भी शरणागत वत्सल बताया–

देख गरूड़ अंग्रेज दल, बण्या अबर नृप व्याल। जठै मान जोधाहरो, भूप हुओ चन्द्रभाल।।

(गरूड़ रूप अंग्रेजों के सामने सर्पों की भांति पलायन करने वाले दूसरे राजाओं को चन्द्रशेखर महादेव की भांति राव जोधा के वंशज मानसिंह ने सुरक्षा प्रदान की।)

ब्रिटिश कंपनी को, परयो ताप जापे ऐसो।
रावन को परयो ताप, जैसे अलीकेस को।।
भग्यो दुग्गु तजे, जाना, ओ खजाना त्याग।
तोपखाना ता तजि दविक्ष्य के देस को।।
उत्तराधिराज रनजीत, नाहीं राख सरण।
स्याह उन लगाई पुण्य गुरूवेस को वीरता तिहारी मान वरने कहाँ लो बंक,
सरणे ते राख्यों नागपुर के नरेस को।

अपमान की अनदेखी करते हुए, अंग्रेजों ने, सहायक संधि के लालच में फंसे राजाओं द्वारा गवर्नर जनरल बैंटिक के सम्मान में अजमेर में आयोजित दरबार में, महाराजा मानसिंह को आमन्त्रित कर पराधीनता के जाल में फंसाने की असफल चेष्टा की। किन्तु मानसिंह ने निमन्त्रण ठुकरा अपनी स्वाधीनता की घोषणा की। राजपूताना में महाराजा मानसिंह ही अकेले शासक थे जिन्होंने ब्रिटिश–नौकरशाही के हस्तक्षेप का भयंकर प्रतिरोध किया। अपने समय के अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति करने वाले को अपना हार्दिक सहयोग दिया।[20]

lUnHk xUFk lph

1. व्यास, माधोलाल; बीकानेर के स्वतन्त्रता सेनानी, जयपुर, 1953, पृ. 4–5
2. स्वामी, नरोत्तमदास (सम्पादक) निबन्ध माला–1, राजस्थानी भाषा साहित्य इतिहास कला, प्रकाशक– भंवरलाल नाहटा, राजस्थानी साहित्य परिषद्, पृ. 23
3. सुजस, हिन्दी द्वैमासिक पत्रिका, जयपुर, जून–जुलाई, 1998, पृ. 46
4. राजपूताना गजट, (हिन्दी–उर्दूभाषा), 5 जनवरी, 1912, अजमेर, सम्पादिका हाबिदा बेगम अंक संवत् 1969, पृ. 2
5. निबन्ध माला–1, पृ. 26 गुजराती लोक साहित्य माला–5, अहमदाबाद, पृ. 8
6. दैनिक नवज्योति, (हिन्दी दैनिक अखबार), जयपुर, 16 जनवरी, 1986, शोभालाल गुप्त का लेख– दो शूरवीर डूंगजी–जवाहरजी, पृ. 7–8
7. मीरायन, मीरां स्मृति संस्थान, चित्तौडगढ़, वर्ष, 1 अंक–3, (द्वैमासिक हिन्दी पत्रिका) सितम्बर–नवम्बर 2007, पृ. 88–81
8. पोलिटिकल कन्सलटेशन, 24–25, दिसम्बर, 1846, सीक्रेट, डिप्टी कमीश्नर, आगरा–मिस्टर आर. हेचार्ड का जॉन सदरलैंड एजीजीय अजमेर को लिखा पत्र, 15 नवम्बर, 1846
9. निबन्ध माला–1, पृ. 27
10. कमिश्नर, रिकार्डस्, अजमेर, आगरा जेल में स्थित 5वीं रेजीमेंट का कैप्टिन मिस्टर पैली एडेन का 22 नवम्बर, 1846 को एजीजी, अजमेर को लिखा पत्र जिसमें डूंगजी के वीरता, अदम्य साहस और अंग्रेज विरोधी भावना को स्पष्ट किया।
11. कमिश्नर रिकार्डस्, उपर्युक्त, पैली एडन का 3 जनवरी, 1846 ई. को एजीजी को लिखा पत्र।
12. स्वामी नरोत्तमदास, उपर्युक्त, पृ. 28
13. राजस्थान का स्वतन्त्रता संग्राम, साहित्य अकादमी, उदयपुर, संस्करण, 1979, पृ. 3–4
14. उजासा ग्रन्थ माला–5, बीकानेर, (सम्पादक–मूलदान), जनवरी, 1998, पृ. 47–48
15. फोरन पोलिटिकल कंस्लटेशन (सीक्रेट), न. 103, 26 अगस्त, 1848 ई. का नसीराबाद लेफ्टि. सर मैन्थन का एजीजी, राजपूताना को लिखा पत्र।
16. फो.पो.क., न. 103, जे.हार्डकेसल का 20 जनवरी, 1848 को एजीजी सदरलैण्ड को लिखा पत्र।
17. उपर्युक्त, न. 107, लार्ड डलहौजी के मिनिट्स– डूंगरसिंह ए नोटेड फ्री बूटर।

18. फाईल न. 101– सदरलैंड़ एजीजी का उत्तर–पश्चिमी प्रान्त के सरकार सचिव नार्थटन को 15 अगस्त, 1848 ई. को लिखा पत्र।

19. उदयपुर के कानोड ठिकाना री बही, न. 41, कार्तिक सुदी तीज विक्रम संवत् 1903 के पृष्ठ 58 से 60 पर महाराणा स्वरूपसिंह का खास रूक्का कोठारिया रावत जोधसिंह के नाम पत्र में लिखा है कि डूंगा शेखावत एक लुटेरा है जो खजाना लूटता है डकैती करता है। आप उसे बंदी बनाने की कोशिश करें आपके इलाके में आकर लूटपाट करता है तो उसकी आर्थिक भरपाई आपको करनी पड़ेगी अन्यथा आपका इलाका जब्त कर लिया जायेगा। इसी प्रकार बनेड़ा ठिकाना रिकार्ड न. 2 विगत न. 10, पत्र संख्या 135–136 कर्नल राबिन्सन का 2 जुलाई, 1847 ई. को पत्र संख्या 136 में मेवाड़ महाराणा स्वरूपसिंह को लिखे पत्र में राबिन्सन द्वारा यह आशंका की कि डूंगजी लुटेरा बनेड़ा से मेवाड़ की ओर निकल गया परन्तु, बनेड़ा ठिकानेदार ने उसे गिरफ्तार नहीं किया। बनेड़ा ठिकाने को खालसा (राजकीय राज्य में सम्मिलित) किया जाये। नसीराबाद कन्टोन्मेंट से डूंगजी ने 27000 सिक्के ले गया, 27 सैनिकों की हत्या कर। अतः आप शीघ्र ही दो हजार रुपये इनाम की राशि घोषित कर उसे पकड़वाने में हमारी मदद करें।

20. उजाला ग्रन्थ माला–5, पृ. 48

21. ओझा, गौरी शंकर हीराचन्द, राजपूताने का इतिहास, अजमेर 1942 ई. भाग–4, पृष्ठ 843–851

22. रेऊ; वी. एन. मारवाड़ का इतिहास, वोल्यूम–4, पृ. 428

23. परम्परा, हिन्दी पत्रिका– गोरा हटजा, प्रकाशन चौपासनी शोध संस्थान, जोधपुर, अगस्त, 1956, पृ. 54 और 60

24. हकीकत बही, न. 8 पौष माह, विक्रम संवत् 1889

♦❐♦